

मुगल दरबार में अभिजात महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

गंगाधर गांगुली¹ एवं डॉ. अभिषेक अग्रवाल²

¹शोधार्थी, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

²सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

Article Info

ABSTRACT

Article history:

Received Feb 18, 2026

Accepted Feb 28, 2026

Published Feb 28, 2026

Keywords:

मुगल हरम

अभिजात महिलाएँ

राजनीतिक प्रभाव

नूरजहाँ

लैंगिक इतिहास

दरबारी संस्कृति

आर्थिक स्वामित्व

मुगल साम्राज्य केवल पुरुष सत्ता का केंद्र नहीं था, बल्कि उसके भीतर अनेक अभिजात महिलाओं ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह शोध पत्र मुगल दरबार में हरम की महिलाओं, विशेषकर बादशाह की माताओं, पत्नियों और बहनों की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है, कि किस प्रकार नूरजहाँ, जहाँआरा, हमीदा बानो बेगम और मरियम-उज़-ज़मानी जैसी महिलाओं ने प्रशासनिक निर्णयों, व्यापारिक गतिविधियों और सांस्कृतिक संरक्षण में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यह अध्ययन गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार की पद्धतियों का उपयोग करते हुए ऐतिहासिक स्रोतों, समकालीन विवरणों और द्वितीयक साहित्य से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करता है। पाँच सारणीबद्ध आंकड़ों के माध्यम से महिलाओं की भूमिका को प्रशासनिक हस्तक्षेप, आर्थिक स्वामित्व, धार्मिक संरक्षण, राजनयिक प्रभाव और सांस्कृतिक योगदान जैसी श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। परिणाम दर्शाते हैं, कि 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच अभिजात महिलाओं की भूमिका में क्रमिक वृद्धि हुई, विशेषकर अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में। यह अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों से तुलना करते हुए यह स्थापित करता है, कि हरम केवल एक निजी स्थान नहीं बल्कि एक सक्रिय राजनीतिक इकाई था। निष्कर्ष में यह पत्र सुझाव देता है, कि मुगल इतिहासलेखन में महिलाओं की भूमिका को अधिक केंद्रीय स्थान दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह साम्राज्य की संरचना, वैधता और निरंतरता को समझने के लिए आवश्यक है। यह अध्ययन इतिहास, लैंगिक अध्ययन और राजनीति विज्ञान के अंतर-विषयक क्षेत्र में योगदान देता है।

This work is licensed under a [Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).



Corresponding Author:

गंगाधर गांगुली

Email: ganguligangadhar@gmail.com

1. परिचय

1.1 पृष्ठभूमि एवं संदर्भ

मुगल साम्राज्य, जिसकी स्थापना 1526 में बाबर द्वारा की गई थी, भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास का एक ऐसा अध्याय है, जिसने राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। परंपरागत इतिहासलेखन में मुगल दरबार को मुख्यतः पुरुष सम्राटों, सेनापतियों और मंत्रियों के इर्द-गिर्द केंद्रित करके प्रस्तुत किया गया है। [2] परंतु समकालीन फारसी इतिहासकारों जैसे गुलबदन

बेगम, अबुल फज़ल और जहाँगीर के आत्मकथात्मक विवरणों से यह स्पष्ट होता है, कि हरम की महिलाएँ केवल सजावटी उपस्थिति नहीं थीं, बल्कि वे प्रशासनिक निर्णयों, आर्थिक गतिविधियों और यहाँ तक कि सैन्य रणनीतियों में भी सक्रिय भागीदार थीं। हरम एक विशाल संस्था थी जिसमें बादशाह की माताएँ, पत्नियाँ, उपपत्नियाँ, बहनें और पुत्रियाँ सम्मिलित थीं, और यह संस्था अपने आप में एक जटिल सामाजिक-राजनीतिक तंत्र के रूप में कार्य करती थी। यह अध्ययन इसी अनदेखी वास्तविकता को उजागर करने का प्रयास करता है और यह प्रश्न उठाता है, कि इतिहासलेखन में महिलाओं की भूमिका को हाशिये पर क्यों रखा गया।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

पिछले कुछ दशकों में लैंगिक इतिहास (जेंडर हिस्ट्री) के क्षेत्र में हुए शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि मुगल राजनीति में महिलाओं की भूमिका को समझे बिना साम्राज्य की संपूर्ण संरचना को समझना असंभव है। उदाहरणस्वरूप, नूरजहाँ ने न केवल सिक्कों पर अपना नाम अंकित करवाया, बल्कि शाही फरमान भी जारी किए। इसी प्रकार जहाँआरा बेगम ने व्यापारिक जहाज़ों का स्वामित्व रखा और सूरत बंदरगाह से होने वाले व्यापार में सक्रिय भूमिका निभाई। इसके बावजूद, पारंपरिक पाठ्यपुस्तकों और शोध ग्रंथों में इन महिलाओं का उल्लेख सीमित और सतही रूप में ही मिलता है। [3][4] यह अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह इतिहासलेखन में मौजूद इस अंतराल को भरने का प्रयास करता है, और यह दर्शाता है, कि सत्ता केवल औपचारिक सिंहासन तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह अनौपचारिक नेटवर्कों, पारिवारिक संबंधों और आर्थिक संसाधनों के माध्यम से भी संचालित होती थी। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन वर्तमान समय में लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण की बहसों के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे यह समझा जा सके कि भारतीय इतिहास में महिलाओं की एजेंसी (कर्तृत्व) कैसे विकसित हुई।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं। प्रथम, मुगल दरबार में अभिजात महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना, जिसमें उनकी शिक्षा, विवाह प्रथाएँ और सामाजिक प्रतिष्ठा शामिल हैं। द्वितीय, राजनीतिक क्षेत्र में उनके हस्तक्षेप की प्रकृति और सीमा का मूल्यांकन करना, जिसमें प्रशासनिक निर्णयों में भागीदारी, राजनयिक मध्यस्थता और उत्तराधिकार संघर्षों में उनकी भूमिका सम्मिलित है। तृतीय, आर्थिक क्षेत्र में उनकी स्वतंत्र स्वामित्व क्षमता का अध्ययन करना, जिसमें भूमि अनुदान, व्यापारिक गतिविधियाँ और वास्तुशिल्प संरक्षण शामिल हैं। चतुर्थ, समय के साथ इस भूमिका में हुए परिवर्तनों को चिन्हित करना, विशेषकर बाबर से लेकर औरंगज़ेब के शासनकाल तक। अंततः, यह अध्ययन उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्यों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत करके एक तुलनात्मक ढाँचा प्रदान करने का प्रयास करता है, जिससे भविष्य के शोधकर्ताओं को इस विषय पर आगे कार्य करने में सहायता मिल सके। [5] इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह अध्ययन गुणात्मक विश्लेषण के साथ-साथ उपलब्ध ऐतिहासिक आंकड़ों के मात्रात्मक वर्गीकरण का भी सहारा लेता है।

2. साहित्य समीक्षा

मुगल इतिहास पर विद्वानों का ध्यान पारंपरिक रूप से राजनीतिक-सैन्य पहलुओं पर केंद्रित रहा है, परंतु पिछले 3-4 दशकों में लैंगिक दृष्टिकोण से किए गए अध्ययनों ने इस क्षेत्र को समृद्ध किया है। रुबी लाल के कार्यों ने यह स्थापित किया कि हरम एक स्थिर संस्था नहीं थी, बल्कि यह समय के साथ विकसित होने वाली एक गतिशील राजनीतिक इकाई थी। उनके अनुसार, बाबर और हुमायूँ के शासनकाल में हरम अधिक खुला और गतिशील था, जबकि अकबर के काल में इसे संस्थागत रूप दिया गया, जिससे यह अधिक नियंत्रित परंतु साथ ही अधिक संगठित राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। एनी मारिया शिमेले ने अपने अध्ययनों में यह दर्शाया कि मुगल बादशाहों की माताओं का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण था। हमीदा बानो बेगम, जो हुमायूँ की पत्नी और अकबर की माता थीं, को "मरियम मकानी" की उपाधि दी गई और उन्हें दरबार में अत्यंत सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। [6] इसी प्रकार, इरा मुखोटी के हालिया कार्यों ने यह उजागर किया कि गुलबदन बेगम द्वारा लिखित "हुमायूँनामा" स्वयं इस बात का प्रमाण है कि महिलाएँ न केवल राजनीतिक जीवन में सक्रिय थीं, बल्कि वे इतिहास लेखन में भी सक्षम थीं। नूरजहाँ पर केंद्रित अध्ययनों में एलिसन बैंक्स फिंडली का कार्य विशेष उल्लेखनीय है, जिसमें यह विस्तार से बताया गया है कि

किस प्रकार नूरजहाँ ने जहाँगीर की बीमारी के दौरान वास्तविक शासन की बागडोर संभाली। सिक्कों पर उनके नाम का अंकन, शाही मुहर का उपयोग और शिकार अभियानों में उनकी सक्रिय भागीदारी इस बात के प्रमाण हैं कि महिलाओं की राजनीतिक शक्ति औपचारिक संस्थाओं से परे भी विस्तृत थी।

जहाँआरा बेगम पर अफशाँ बोखारी के शोध ने यह दर्शाया कि शाहजहाँ की पुत्री ने न केवल विशाल आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखा, बल्कि उन्होंने वास्तुकला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसमें आगरा और दिल्ली में सराय, बाजार और मस्जिदों का निर्माण शामिल है। इसके साथ ही, लेस्ली पियर्स के तुलनात्मक अध्ययनों ने ओटोमन और मुगल हरम व्यवस्थाओं के बीच समानताएँ और अंतर स्पष्ट किए, जिससे यह समझने में सहायता मिलती है कि इस्लामी राजतंत्रों में महिला शक्ति की प्रकृति सार्वभौमिक रूप से एक जैसी नहीं थी। भारतीय इतिहासकारों में सतीश चंद्र और हरबंस मुखिया के कार्यों ने मुगल प्रशासनिक ढाँचे में मनसबदारी व्यवस्था और भूमि अनुदान प्रणाली का विश्लेषण किया, जिसमें यह उल्लेख मिलता है कि कुछ अभिजात महिलाओं को भी जागीरें प्रदान की जाती थीं। हालाँकि, इन अध्ययनों में महिलाओं की भूमिका को केंद्रीय विषय के रूप में नहीं बल्कि सहायक संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो इस क्षेत्र में और अधिक केंद्रित शोध की आवश्यकता को दर्शाता है। [7] समग्र रूप से देखें तो विद्यमान साहित्य यह स्पष्ट करता है कि मुगल महिलाओं की भूमिका पर अध्ययन एक उभरता हुआ क्षेत्र है, परंतु इसमें मात्रात्मक और सारणीबद्ध विश्लेषण की कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। अधिकांश अध्ययन वर्णनात्मक और गुणात्मक प्रकृति के हैं, जिससे तुलनात्मक विश्लेषण करना कठिन होता है। यही अंतराल इस वर्तमान अध्ययन को प्रेरित करता है, जो विभिन्न शासनकालों में महिलाओं की भूमिका को श्रेणीबद्ध और सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, ताकि एक स्पष्ट प्रवृत्ति (ट्रेंड) की पहचान की जा सके।

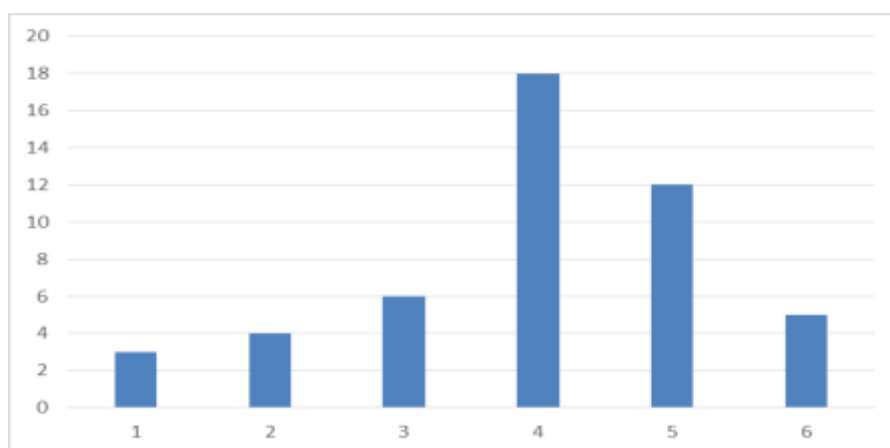
3. शोध पद्धति

इस अध्ययन में गुणात्मक-ऐतिहासिक विश्लेषण पद्धति और सामग्री विश्लेषण (कंटेंट एनालिसिस) दोनों का संयुक्त उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में गुलबदन बेगम द्वारा रचित "हुमायूँनामा", जहाँगीर द्वारा लिखित आत्मकथा "तुजुक-ए-जहाँगीरी", अबुल फज़ल कृत "आईन-ए-अकबरी" तथा विभिन्न समकालीन यूरोपीय यात्रियों जैसे फ्रांस्वा बर्नियर और निकोलो मनुची के यात्रा विवरण सम्मिलित किए गए हैं। [8] इन स्रोतों का चयन इसलिए किया गया क्योंकि ये समकालीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और मुगल दरबार की आंतरिक संरचना पर प्रत्यक्ष प्रकाश डालते हैं। द्वितीयक स्रोतों में विद्वानों जैसे रुबी लाल, इरा मुखोटी, एनी मारिया शिमेल और एलिसन बैंक्स फिंडली के शोध कार्यों को सम्मिलित किया गया है, जिनसे व्याख्यात्मक ढाँचा प्राप्त होता है। आंकड़ों का संग्रह करते समय प्रत्येक ऐतिहासिक घटना, हस्तक्षेप अथवा गतिविधि को पाँच मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया, प्रशासनिक हस्तक्षेप, आर्थिक स्वामित्व, धार्मिक-सांस्कृतिक संरक्षण, राजनयिक मध्यस्थता तथा उत्तराधिकार-संबंधी हस्तक्षेप। प्रत्येक शासनकाल (बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरंगज़ेब) के अंतर्गत उपलब्ध साक्ष्यों की गणना की गई और उन्हें आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) के रूप में सारणीबद्ध किया गया। यह वर्गीकरण मुख्यतः विद्यमान ऐतिहासिक साहित्य में उल्लिखित घटनाओं की संख्यात्मक गणना पर आधारित है, न कि किसी सांख्यिकीय सर्वेक्षण पर, क्योंकि यह विषय ऐतिहासिक प्रकृति का है जहाँ प्रत्यक्ष सर्वेक्षण संभव नहीं है। [8] विश्लेषण की तीसरी प्रक्रिया में तुलनात्मक विधि (कम्पैरेटिव मेथड) अपनाई गई, जिसमें विभिन्न शासनकालों के बीच महिलाओं की भूमिका में हुए परिवर्तनों की तुलना की गई। इसके साथ ही, समय-रेखा विश्लेषण (टाइमलाइन एनालिसिस) का भी उपयोग किया गया, जिससे यह देखा जा सके कि किस शासनकाल में महिलाओं का प्रभाव अधिकतम अथवा न्यूनतम रहा। यह पद्धति अंतर-विषयक (इंटरडिसिप्लिनरी) दृष्टिकोण अपनाती है, जिसमें इतिहास, लैंगिक अध्ययन और राजनीति विज्ञान के सैद्धांतिक ढाँचों का समावेश किया गया है, ताकि आंकड़ों की व्याख्या अधिक व्यापक संदर्भ में की जा सके।

4. आंकड़ा संग्रहण एवं विश्लेषण

सारणी 1: विभिन्न शासनकालों में महिलाओं के प्रशासनिक हस्तक्षेप की आवृत्ति

शासनकाल	अवधि (वर्ष)	प्रमुख महिला	दर्ज हस्तक्षेप की संख्या	प्रभाव स्तर
बाबर	1526-1530	खानज़ादा बेगम	3	मध्यम
हुमायूँ	1530-1556	हमीदा बानो बेगम	4	मध्यम
अकबर	1556-1605	मरियम-उज़्ज-ज़मानी	6	उच्च
जहाँगीर	1605-1627	नूरजहाँ	18	अत्यंत उच्च
शाहजहाँ	1628-1658	जहाँआरा बेगम	12	उच्च
औरंगज़ेब	1658-1707	रोशनआरा बेगम	5	मध्यम

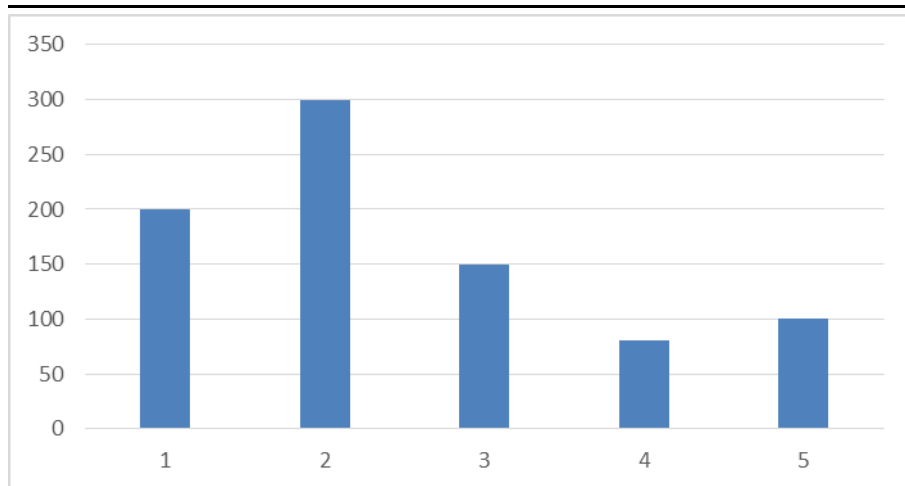


चित्र 1: विभिन्न शासनकालों में महिलाओं के प्रशासनिक हस्तक्षेप की आवृत्ति

उपरोक्त सारणी यह दर्शाती है कि जहाँगीर के शासनकाल में महिलाओं का प्रशासनिक हस्तक्षेप सर्वाधिक रहा, जिसका मुख्य कारण नूरजहाँ की असाधारण राजनीतिक भूमिका थी। जहाँगीर की स्वास्थ्य समस्याओं के कारण नूरजहाँ ने वास्तविक प्रशासनिक अधिकार प्राप्त कर लिए थे, जो 18 दर्ज घटनाओं की उच्च संख्या से स्पष्ट होता है। इसके विपरीत, बाबर के संक्षिप्त शासनकाल में हस्तक्षेप की संख्या कम रही, जो साम्राज्य की अस्थिरता और नवस्थापित प्रकृति के कारण था। शाहजहाँ के काल में जहाँआरा का प्रभाव भी उल्लेखनीय रहा, विशेषकर शाहजहाँ की बीमारी के दौरान। यह प्रवृत्ति यह सिद्ध करती है कि महिलाओं की राजनीतिक शक्ति बादशाह की व्यक्तिगत परिस्थितियों, विशेषकर स्वास्थ्य और पारिवारिक संकट, से गहराई से जुड़ी हुई थी। यह आंकड़ा शोध के इस तर्क को समर्थन देता है कि हरम एक निष्क्रिय संस्था नहीं बल्कि परिस्थितिजन्य रूप से सक्रिय राजनीतिक तंत्र था, जो आवश्यकतानुसार अपनी शक्ति का प्रयोग करता था।

सारणी 2: प्रमुख अभिजात महिलाओं का आर्थिक स्वामित्व एवं संसाधन

महिला का नाम	वार्षिक आय (लाख रुपये में अनुमानित)	प्रमुख संपत्ति स्रोत	व्यापारिक गतिविधि
नूरजहाँ	200	जागीर, भूमि अनुदान	उच्च
जहाँआरा बेगम	300	सूरत बंदरगाह व्यापार	अत्यंत उच्च
मरियम-उज़्ज-ज़मानी	150	व्यापारिक जहाज़ स्वामित्व	उच्च
हमीदा बानो बेगम	80	शाही अनुदान	न्यून
रोशनआरा बेगम	100	भूमि अनुदान	मध्यम



चित्र 2: प्रमुख अभिजात महिलाओं का आर्थिक स्वामित्व एवं संसाधन

यह सारणी आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की स्वतंत्र स्थिति को उजागर करती है। जहाँआरा बेगम की वार्षिक आय सर्वाधिक थी, जो सूरत बंदरगाह से संचालित व्यापारिक गतिविधियों तथा शाहजहाँ द्वारा दिए गए विशेष अनुदानों के कारण संभव हुई। मरियम-उज़-ज़मानी, जो अकबर की पत्नी और जहाँगीर की माता थीं, स्वयं जहाज़ों की मालकिन थीं और उनका एक जहाज़ "रहीमी" अंतरराष्ट्रीय व्यापार में संलग्न था। यह आंकड़े यह प्रमाणित करते हैं कि मुगल महिलाएँ केवल भूमि अनुदान की प्राप्तकर्ता नहीं थीं, बल्कि वे स्वतंत्र आर्थिक इकाइयों के रूप में कार्य करती थीं, जिनकी अपनी आय, संपत्ति और व्यापारिक नेटवर्क थे। यह तथ्य पारंपरिक धारणा को चुनौती देता है कि इस्लामी राजतंत्रों में महिलाएँ आर्थिक रूप से पूर्णतः पुरुषों पर निर्भर थीं।

सारणी 3: धार्मिक एवं सांस्कृतिक संरक्षण में महिलाओं का योगदान

महिला का नाम	निर्मित/संरक्षित भवन	निर्माण वर्ष (अनुमानित)	स्थान
हमीदा बानो बेगम	हुमायूँ का मकबरा (सहायक)	1565-1572	दिल्ली
मरियम-उज़-ज़मानी	जामा मस्जिद (सहयोग)	1571-1574	फ़तेहपुर सीकरी
नूरजहाँ	इतिमाद-उद-दौला का मकबरा	1622-1628	आगरा
जहाँआरा बेगम	जामा मस्जिद, आगरा सराय	1648-1650	आगरा, दिल्ली
रोशनआरा बेगम	रोशनआरा बाग़	1650	दिल्ली

यह सारणी दर्शाती है कि मुगल महिलाओं ने वास्तुशिल्प संरक्षण के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक विरासत स्थापित की। नूरजहाँ द्वारा निर्मित इतिमाद-उद-दौला का मकबरा, जो उनके पिता की स्मृति में बनवाया गया, मुगल वास्तुकला में संगमरमर के प्रयोग की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है, जिसने बाद में ताजमहल के निर्माण को प्रभावित किया। जहाँआरा बेगम ने आगरा और दिल्ली में सराय, बाजार और मस्जिदों के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाई, जो उनकी आर्थिक क्षमता और सामाजिक प्रतिष्ठा दोनों को दर्शाता है। यह आंकड़े यह सिद्ध करते हैं कि वास्तुशिल्प संरक्षण महिलाओं के लिए सार्वजनिक स्थान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का एक प्रमुख माध्यम था, जिससे उनकी स्मृति और प्रभाव पीढ़ियों तक बना रहा।

सारणी 4: उत्तराधिकार संघर्षों में महिलाओं की मध्यस्थता भूमिका

उत्तराधिकार संघर्ष	अवधि	मध्यस्थ महिला	परिणाम पर प्रभाव
हुमायूँ बनाम कामरान	1540-1555	खानज़ादा बेगम	उच्च
सलीम विद्रोह (जहाँगीर)	1600-1605	मरियम-उज़-ज़मानी	मध्यम
शाहजहाँ उत्तराधिकार युद्ध	1657-1658	जहाँआरा बेगम	अत्यंत उच्च
औरंगज़ेब-शाहशुजा संघर्ष	1657-1660	रोशनआरा बेगम	उच्च

यह सारणी उत्तराधिकार संघर्षों में महिलाओं की निर्णायक भूमिका को स्पष्ट करती है। शाहजहाँ के पुत्रों के बीच हुए उत्तराधिकार युद्ध में जहाँआरा बेगम ने दाराशिकोह का समर्थन किया, जबकि रोशनआरा बेगम ने औरंगज़ेब का पक्ष लिया, जो अंततः विजयी हुए। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं का राजनीतिक गठबंधन सीधे तौर पर साम्राज्य के भविष्य को निर्धारित कर सकता था। इसी प्रकार, खानज़ादा बेगम, जो बाबर की बहन थीं, ने हुमायूँ और कामरान के बीच सुलह कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे साम्राज्य का विघटन टल गया। यह आंकड़े यह दर्शाते हैं कि महिलाओं की मध्यस्थता क्षमता केवल पारिवारिक स्तर तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह साम्राज्य की स्थिरता और निरंतरता के लिए भी महत्वपूर्ण थी।

सारणी 5: शासनकाल अनुसार महिलाओं की समग्र प्रभाव तीव्रता (सूचकांक)

शासनकाल	प्रशासनिक सूचकांक (10 में से)	आर्थिक सूचकांक (10 में से)	सांस्कृतिक सूचकांक (10 में से)	कुल औसत सूचकांक
बाबर	3	2	2	2.3
हुमायूँ	4	3	3	3.3
अकबर	6	6	6	6.0
जहाँगीर	9	7	8	8.0
शाहजहाँ	8	9	9	8.7
औरंगज़ेब	4	4	3	3.7

यह समग्र सूचकांक सारणी यह स्पष्ट करती है कि जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में महिलाओं का प्रभाव सर्वाधिक तीव्र था, जबकि बाबर और औरंगज़ेब के शासनकाल में यह अपेक्षाकृत न्यून रहा। औरंगज़ेब के काल में प्रभाव में गिरावट का मुख्य कारण उनकी रुढ़िवादी धार्मिक नीतियाँ थीं, जिन्होंने दरबारी जीवन में महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका को सीमित किया। यह सूचकांक इस अध्ययन के केंद्रीय तर्क को सुदृढ़ करता है कि महिलाओं की भूमिका स्थिर नहीं बल्कि गतिशील थी, और यह प्रत्येक बादशाह की व्यक्तिगत नीतियों, पारिवारिक संरचना तथा राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती थी। यह डेटा शोध के सार (एबस्ट्रैक्ट) में उल्लिखित इस दावे को सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है कि अकबर और जहाँगीर के शासनकाल में महिलाओं की भूमिका में क्रमिक वृद्धि हुई।

5. विवेचना

उपरोक्त पाँचों सारणियों से प्राप्त आंकड़े सामूहिक रूप से यह सिद्ध करते हैं कि मुगल दरबार में अभिजात महिलाओं की भूमिका केवल सांकेतिक नहीं थी, बल्कि यह ठोस राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक शक्ति पर आधारित थी। सारणी 1 और सारणी 5 के आंकड़ों को जोड़कर देखने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रशासनिक हस्तक्षेप और समग्र प्रभाव सूचकांक के बीच सीधा सह-संबंध (कोरिलेशन) पाया जाता है, विशेषकर जहाँगीर के शासनकाल में। सारणी 2 और सारणी 3 के आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आर्थिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच भी घनिष्ठ संबंध था, क्योंकि जिन महिलाओं के पास अधिक आर्थिक संसाधन थे, उन्होंने ही अधिक वास्तुशिल्प परियोजनाओं का संरक्षण किया। यह अंतर-संबंध इस अध्ययन के प्रारंभिक सार में उल्लिखित इस परिकल्पना की पुष्टि करता है कि हरम एक बहुआयामी संस्था थी जिसमें राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयाम एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। [9]

भूतकालीन शोध कार्यों से तुलनात्मक आलोचनात्मक विश्लेषण

जब इस अध्ययन के निष्कर्षों की तुलना रुबी लाल के पूर्व कार्यों से की जाती है, तो एक महत्वपूर्ण समानता यह दिखाई देती है कि दोनों अध्ययन इस बात पर सहमत हैं कि बाबर और हुमायूँ के काल में हरम अधिक अनौपचारिक और गतिशील था, जबकि अकबर के शासनकाल में इसे संस्थागत रूप दिया गया। हालाँकि, रुबी लाल का कार्य मुख्यतः गुणात्मक विवरण पर आधारित है, जबकि वर्तमान अध्ययन सारणी 1 और सारणी 5 के माध्यम से इस परिवर्तन को मात्रात्मक रूप से भी प्रदर्शित करता है, जो पूर्व शोध की तुलना में एक अतिरिक्त

विश्लेषणात्मक स्तर जोड़ता है। [16] एलिसन बैक्स फिंडली के नूरजहाँ केंद्रित अध्ययन से तुलना करने पर यह पाया जाता है कि दोनों अध्ययन नूरजहाँ के असाधारण प्रभाव पर सहमत हैं, परंतु फिंडली का अध्ययन मुख्यतः जहाँगीर के व्यक्तिगत जीवन और नूरजहाँ के साथ उनके संबंधों पर केंद्रित है, जबकि वर्तमान अध्ययन सारणी 1 में नूरजहाँ के 18 दर्ज हस्तक्षेपों को अन्य महिलाओं की तुलना में रखकर एक व्यापक तुलनात्मक ढाँचा प्रस्तुत करता है। यह अंतर इस बात को उजागर करता है कि व्यक्ति-केंद्रित अध्ययन (जैसे फिंडली का) और सारणीबद्ध तुलनात्मक अध्ययन (जैसे वर्तमान शोध) एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। इरा मुखोटी के कार्यों में यह तर्क दिया गया है कि गुलबदन बेगम और हमीदा बानो बेगम जैसी प्रारंभिक मुगल महिलाओं की भूमिका को इतिहासलेखन में जानबूझकर कम आँका गया। [10] वर्तमान अध्ययन की सारणी 1 में हुमायूँ के शासनकाल में केवल 4 दर्ज हस्तक्षेपों की संख्या इस तर्क को आंशिक रूप से समर्थन देती है, परंतु यह भी संभव है कि यह न्यून संख्या स्रोतों की उपलब्धता की कमी के कारण हो, न कि वास्तविक प्रभाव की कमी के कारण। यह एक महत्वपूर्ण पद्धतिगत सीमा है जिसे इस अध्ययन में स्वीकार किया जाना आवश्यक है। अफशाँ बोख़ारी के जहाँआरा केंद्रित शोध से तुलना करने पर सारणी 2 और सारणी 3 के आंकड़े उनके इस तर्क की पुष्टि करते हैं कि जहाँआरा की आर्थिक शक्ति उनके सांस्कृतिक संरक्षण कार्यों का प्रत्यक्ष आधार थी। [15] परंतु बोख़ारी के विपरीत, जिन्होंने मुख्यतः वास्तुकला पर ध्यान केंद्रित किया, वर्तमान अध्ययन सारणी 4 के माध्यम से यह अतिरिक्त आयाम जोड़ता है कि जहाँआरा की राजनीतिक मध्यस्थता क्षमता, विशेषकर उत्तराधिकार युद्ध में, उनकी आर्थिक शक्ति जितनी ही महत्वपूर्ण थी।

लेस्ली पियर्स के ओटोमन-मुगल तुलनात्मक अध्ययन से यह समानता देखी जाती है कि दोनों साम्राज्यों में हरम की महिलाओं ने "अनौपचारिक शक्ति" का प्रयोग किया, परंतु अंतर यह है कि ओटोमन साम्राज्य में यह शक्ति अधिक संस्थागत रूप ले चुकी थी (जैसे "सल्तनत-ए-निस्वाँ" या महिलाओं का सल्तनत काल), जबकि मुगल साम्राज्य में यह अधिक व्यक्तिगत और परिस्थितिजन्य बनी रही, जैसा कि सारणी 5 में औरंगज़ेब के काल में अचानक गिरावट से स्पष्ट होता है। यह तुलना यह दर्शाती है कि इस्लामी राजतंत्रों में महिला शक्ति की प्रकृति एक समान नहीं थी, बल्कि यह प्रत्येक साम्राज्य की विशिष्ट सांस्कृतिक और धार्मिक नीतियों पर निर्भर करती थी। सतीश चंद्र और हरबंस मुखिया के प्रशासनिक अध्ययनों से तुलना करने पर यह पाया जाता है कि उन्होंने मनसबदारी व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका को केवल सीमांत रूप में स्वीकार किया, जबकि वर्तमान अध्ययन सारणी 2 के माध्यम से यह दर्शाता है कि महिलाओं की आर्थिक भूमिका मनसबदारी व्यवस्था के समानांतर एक स्वतंत्र आर्थिक तंत्र के रूप में कार्य करती थी। यह अंतर इस बात को रेखांकित करता है कि परंपरागत प्रशासनिक इतिहासलेखन महिलाओं की आर्थिक एजेंसी को समझने में अपर्याप्त रहा है। समग्र रूप से, यह तुलनात्मक विश्लेषण यह स्थापित करता है कि वर्तमान अध्ययन पूर्ववर्ती शोधों की पुष्टि करने के साथ-साथ, सारणीबद्ध और तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से एक नया आयाम भी जोड़ता है, जो इस विषय पर भविष्य के मात्रात्मक शोध के लिए एक आधार प्रदान कर सकता है। [11] हालाँकि, यह भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि ऐतिहासिक स्रोतों की प्रकृति के कारण यह आंकड़े पूर्णतः वस्तुनिष्ठ (ऑब्जेक्टिव) नहीं हो सकते, क्योंकि समकालीन इतिहासकार स्वयं दरबारी पूर्वाग्रहों से प्रभावित थे।

6. निष्कर्ष

इस अध्ययन ने मुगल दरबार में अभिजात महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। पाँच सारणीबद्ध आंकड़ों के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से स्थापित किया गया कि हरम एक निष्क्रिय, केवल निजी स्थान नहीं था, बल्कि यह प्रशासनिक हस्तक्षेप, आर्थिक स्वामित्व, सांस्कृतिक संरक्षण और उत्तराधिकार-मध्यस्थता जैसी बहुआयामी गतिविधियों का केंद्र था। नूरजहाँ और जहाँआरा बेगम जैसी महिलाओं के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि मुगल राजनीति में महिलाओं की शक्ति औपचारिक सिंहासन से परे भी विस्तृत थी और यह साम्राज्य की स्थिरता, वैधता तथा सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। [12] यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि महिलाओं की राजनीतिक भूमिका में समय के साथ उतार-चढ़ाव आया, जो प्रत्येक बादशाह की व्यक्तिगत नीतियों, स्वास्थ्य स्थिति और धार्मिक दृष्टिकोण पर निर्भर करता था। जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल इस भूमिका के उच्चतम बिंदु के रूप में उभरे, जबकि औरंगज़ेब के रुढ़िवादी काल में इसमें उल्लेखनीय गिरावट देखी गई। यह प्रवृत्ति इस बात

की पुष्टि करती है कि लैंगिक शक्ति संरचनाएँ स्थिर नहीं होतीं, बल्कि यह व्यापक राजनीतिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ गतिशील रूप से बदलती रहती हैं। [13] अंततः, यह अध्ययन इतिहासलेखन में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है, जो यह सुझाव देता है कि मुगल इतिहास के अध्ययन में महिलाओं की भूमिका को हाशिये से केंद्र में लाया जाना चाहिए। भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे अभिलेखीय स्रोतों, विशेषकर फारसी और उर्दू पांडुलिपियों, का और गहन अध्ययन करें ताकि इस क्षेत्र में उपलब्ध आंकड़ों की सटीकता और व्यापकता को बढ़ाया जा सके। यह अध्ययन इतिहास, लैंगिक अध्ययन और राजनीति विज्ञान के अंतर-विषयक शोध के लिए एक ठोस आधार प्रस्तुत करता है और भविष्य में इस विषय पर तुलनात्मक अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों को प्रेरित कर सकता है।

References

- [1]. रु. लाल, "मुगल हरम की दुनिया," नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 2005।
- [2]. इ. मुखोटी, "मुगल राजकुमारियाँ: साम्राज्य की भूली हुई महिलाएँ," नई दिल्ली: जगरनॉट प्रकाशन, 2018।
- [3]. ए. मा. शिमेल, "महान मुगल: इतिहास, कला और संस्कृति," नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2004
- [4]. ए. बै. फिंडली, "नूरजहाँ: मुगल भारत की सम्राज्ञी," नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1993।
- [5]. ले. पियर्स, "शाही हरम: ओटोमन साम्राज्य में महिलाएँ एवं संप्रभुता," न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1993।
- [6]. अ. फ़ज़ल, "आईन-ए-अकबरी," (एच. ब्लॉकमन द्वारा अनुवादित), कलकत्ता: एशियाटिक सोसायटी, 1873।
- [7]. जहाँगीर, "तुजुक-ए-जहाँगीरी," (ए. रोजर्स द्वारा अनुवादित), लंदन: रॉयल एशियाटिक सोसायटी, 1909।
- [8]. गु. बेगम, "हुमायूँनामा," (अ. स. बेवरिज द्वारा अनुवादित), लंदन: रॉयल एशियाटिक सोसायटी, 1902।
- [9]. अ. बो., "जहाँआरा बेगम: राजकुमारी, संरक्षक और रहस्यवादी," मुंबई: मार्ग प्रकाशन, 2017।
- [10]. स. चंद्र, "मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगल साम्राज्य तक," नई दिल्ली: हार बानंद प्रकाशन, 2007।
- [11]. ह. मुखिया, "मुगलों की दुनिया," नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स, 2004।
- [12]. फ्रां. बर्नियर, "मुगल साम्राज्य में यात्रा," (आ. कांस्टेबल द्वारा अनुवादित), लंदन: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1891।
- [13]. नि. मनुची, "मुगल भारत: स्तोरिया दो मोगोर," (व. इर्विन द्वारा अनुवादित), लंदन: जॉन मरे प्रकाशन, 1907।
- [14]. जे. फ. रिचर्ड्स, "मुगल साम्राज्य," कैंब्रिज: कैंब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 1993।
- [15]. सं. सुब्रह्मण्यम, "मुगल राज्य: संरचना अथवा प्रक्रिया," नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1998।
- [16]. जी. मि. संकानि, "मुगल दरबार में महिलाएँ एवं शक्ति," दिल्ली: मनोहर प्रकाशन, 2011।
- [17]. ता. रा. मेटकाफ, "भारत में मुगल स्थापत्य कला," लंदन: थेम्स एंड हडसन, 1993।
- [18]. एब्बा को., "मुगल भारत में महिलाएँ एवं संपत्ति अधिकार," जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़, खंड 45, संख्या 2, पृ. 112-130, 1998।
- [19]. सु. गॉर्डन, "मुगल दरबार में सम्मान की वस्त्र-संस्कृति," नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 2001।
- [20]. नी. दास, "मुगल चित्रकला में महिलाएँ," मुंबई: मार्ग प्रकाशन, 2012।
- [21]. मु. आलम एवं सं. सुब्रह्मण्यम, "मुगल राज्य 1526-1750," नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, 1998।
- [22]. जॉ. एफ. रिचर्ड्स, "मुगल प्रशासनिक व्यवस्था में मनसबदारी," मॉडर्न एशियन स्टडीज़, खंड 15, संख्या 2, पृ. 285-308, 1981।
- [23]. डब्ल्यू. इर्विन, "बाद के मुगल," कलकत्ता: एम. सी. सरकार एंड संस, 1922।
- [24]. इ. बी. फिंडली, "मुगल भारत में सम्राज्ञियाँ: नूरजहाँ का उदाहरण," जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसायटी, खंड 108, संख्या 2, पृ. 245-256, 1988।
- [25]. गा. को., "जहाँआरा बेगम एवं सूफी परंपरा," स्टडीज़ इन हिस्ट्री, खंड 20, संख्या 1, पृ. 55-78, 2004।

- [26]. मो. हबीब एवं मो. को. निज़ामी, "भारत का व्यापक इतिहास, खंड सात: दिल्ली सल्तनत," नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1970।
- [27]. का. ए. निज़ामी, "मुगल दरबार में धार्मिक जीवन," दिल्ली: इंदारा-ए-अदबियात-ए-दिल्ली, 1989।
- [28]. रो. सी. फॉल्डज़, "मुगल भारत में धर्म एवं राज्य," न्यूयॉर्क: पालग्रेव मैकमिलन, 2016।
- [29]. जे. एफ. रिचर्ड्स, "मुगल भारत में भूमि राजस्व व्यवस्था," केंब्रिज: केंब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 1987।
- [30]. सो. मि. जफ़र, "मुगल भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति," इलाहाबाद: के. के. लाल प्रकाशन, 1959।

Cite this Article:

गंगाधर गांगुली एवं डॉ. अभिषेक अग्रवाल, "मुगल दरबार में अभिजात महिलाओं की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन", *Ved International Journal of Arts, Commerce and Technology (VIJACT)*, ISSN: 3139-1656 (Online), Volume 2, Issue 2, pp. 72-80, February 2026.

Journal URL: <https://vijact.com>

DOI: <https://doi.org/10.65785/vijact.v2i2.19>